भारत में कॉफ़ी का उपभोग-2009

विगत कुछ वर्षों से भारत में कॉफ़ी अत्यंत लोकप्रिय होती जा रही है। अब यह एक पारंपरिक पेय के रुप में ही नहीं बल्कि युवा पीढ़ी की पेय व प्रावृत्तिक पेय के रुप में उभरकर आई है। कॉफ़ी के स्वदेशी उपभोग बढ़ाने के लिए कॉफ़ी बोर्ड ने व्यापारियों, रोस्टर्स एवं संभावित नवागतों को उपभोक्ता अंतर्दृष्टि प्रदान करने पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है। कॉफ़ी के स्वदेशी उपभोग बढ़ाने के लिए किसी भी योजना बनाने से पूर्व कॉफ़ी बोर्ड ने पेय पदार्थों के सेवन से संबंधित आदतें,व्यवहार व अभिरुचियों के बारे में राष्ट्रीय स्तर पर विस्तृत अध्ययन किया है।

यह कॉफ़ी बोर्ड द्वारा किया गया पाँचवाँ विस्तृत औपचारिक अध्ययन है।

कॉफ़ी बोर्ड द्वारा नियमित अंतराल में ऐसे अधिक विस्तृत उपभोग परीक्षण आयोजित करने का प्रस्ताव दिया जाता है।

निम्न बातों के निरीक्षण के लिए रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है:-

- शहरी (दक्षिण व उत्तर) तथा ग्रामीण (दक्षिण) क्षेत्रों के कॉफ़ी उपभोगों से संबंधित आदतें व व्यवहार
- स्थान एवं प्रकार के अनुसार कॉफ़ी उपभोग
- दैनिक पेय उपभोगों में से कॉफ़ी का शेयर
- कॉफ़ी के प्रति अभिरुचि एवं कॉफ़ी उपभोग संबंधी प्रेरक व अवरोध

इससे क्षेत्र,आयु,लिंग तथा सामाजिक-आर्थिक वर्गीकरण (एसईसी) के अनुसार अखिल भारतीय उपभोग की जानकारी प्राप्त होती है जो भारत के कॉफ़ी उत्पादक तथा विपणन व्यवसायकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मूल्यः रू.500

सीडी प्रारूप में रिपोर्ट उपलब्ध है।

संपर्क-सूत्र :
सस्य-विज्ञानी,
विपणन सतर्कता एकक,
भारतीय कॉफ़ी बोर्ड,
नं.1, अंबेडकर वीथी,बेंगलूर-560001. भारत
दूरभाष: 91-80-22261584,22266991 (विस्तार-207)
फ़ैक्स: 91-80-22255557
ई-मेल- ageconomist.cb@gmail.com

भारत में कॉफ़ी का उपभोग-प्रवृत्तियाँ व अभिरुचियाँ

- 2009 में भारत में उपजे कुल स्वच्छ कॉफ़ी का परिमाण 102,000 टन्स अनुमानित किया गया है।

- कुल मात्रा का 73% शहरी उपभोग तथा शेष 27% ग्रामीण उपभोग के रूप (दक्षिण भारत) में पाया गया है।
- उत्तर,पूर्वी तथा पश्चिम क्षेत्रों में फ़िल्टर कॉफ़ी की तुलना में इंस्टेंट कॉफ़ी का उपभोग अधिक रहा है। हालाँकि दक्षिण क्षेत्र में इंस्टेंट कॉफ़ी की तुलना में फ़िल्टर कॉफ़ी का उपभोग अधिक रहा है।
- भारत में उपभोज्य कुल कॉफ़ी में से लगभग 80,538 मे.ट (78%) का उपभोग केवल दक्षिण क्षेत्र में ही किया गया है। दक्षिण क्षेत्रों के बीच तमिलनाडु में 36% का उपभोग रहा, जबकि कर्नाटक, आंध्रप्रदेश तथा केरल में क्रमश: 31%, 18% तथा 15% का उपभोग किया गया है ।
- दक्षिणेतर क्षेत्र में उपभोग की संभावना अधिक है, जहाँ प्रासंगिक उपभोक्ताओं की संख्या अधिक हैं। कुल उपभोक्ताओं में से 52% प्रासंगिक उपभोक्ता हैं, इसका मतलब यह है कि यहाँ के लोग इस पेय के स्वाद का अनुभव करने लगे हैं, जिससे उपभोग बढ़ने की संभावना अधिक हो गई है। इन उपभोक्ताओं को नियमित कॉफ़ी उपभोक्ताओं में परिवर्तित करवाने से कॉफ़ी का उपभोग बढ़ने की संभावना है।
- वर्ष 2003 व 2009 के बीच कॉफ़ी न पीने वालों की संख्या घट गई है, लेकिन प्रासंगिक उपभोक्ताओं का अनुपात बढ़ गया है। निम्नानुसार विभिन्न क्षेत्रों में प्रासंगिक उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ने की संभावना है:-

  पूर्वी क्षेत्र : 80%

  उत्तरी क्षेत्र : 75% तथा

  पश्चिमी क्षेत्र : 63%
- अभिरुचि सर्वेक्षण से उपभोग के प्रेरक एवं अवरोध की जानकारी प्राप्त होती है। भारत में इन प्रचलित पूर्वाग्रहों से कॉफ़ी में अवरोध उत्पन्न होता है कि कॉफ़ी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, एक कप कॉफ़ी बनाना ढेढ़ी खीर है व हर बार फ़िल्टर/कॉफ़ी मैकर साफ़ करना दुष्कर काम है।